Administrators' Service Wing

Annual Report April 2014 to March 2015

Administrators' Service Wing, RE&RF and
Prajapita Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalaya
World Headquarters : Mount Abu, Rajasthan (India)
Website : www.brahmakumaris.com

Sister BK Neha given Stress Management Programme at Ahmadabad Management Association for AUDA's & GUDA's Officers and staff members in Government of Gujarat's Training Programme " GATISHEEL GUJARAT LAKSHA 100 DIVAS"..

After the program Group photo in the middle Rakeh Agarwall (I.A.S) Add. Chief Secretary Govt. of M P B.K Sister shivani Famous Orator and BK Awdesh National Co-ordinator Administrator Service Wing & Bhopal Zone Incharge Mr. R. Parsuram (I.A.S)State Election commission Govt. Of M.P. & about 350 Others attend the program

गोवा - पणजी/मापुसा में आयोजित मीटिंग, ट्रैनिंग और महिला प्रशासकों के स्नेहमिलन तथा गोवा टूरिजम कोर्पोशन में ट्रैनिंग का समाचार

ब्रह्माकुमारीज़, पणजी/मापुसा, गोवा सेवाकेन्द्र तथा प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा 6 से 9 मार्च, 2015 के दौरान वार्षिक सेवा योजना हेतू मीटिंग, प्रभाग के सदस्यों के लिए ट्रैनिंग, गोवा टूरीजम डेवलपमेन्ट कोर्पोरेशन में ट्रैनिंग तथा महिला प्रशासकों के लिए स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। भारत के विभिन्न राज्य व प्रांतों से आये हुए प्रशासक सेवा प्रभाग के लगभग 50 सदस्यों ने भाग लिया। मीटिंग में जो सूचन/सुझाव निकले है, वह निम्नलिखित है:

(1) प्रशासक वर्ग की सेवा के लिए हर सेवाकेन्द्र के जिला व तहसिल के सेवा-विस्तार में एक या दो सप्ताह का अभियान निकाला जाए।

(2) हर सेवाकेन्द्र अपने विस्तार के प्रशासनिक अधिकारियों की सूचि तैयार करें और पूरे वर्ष में उन्हों के लिए स्नेह मिलन/सेमिनार/वर्कशोप आदि का आयोजन दो/तीन बार किया जाए।

(3) वर्ष: 2015-16 में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की मुख्य विचारधारा। विषय: 'चले स्वर्णिम् प्रशासन की ओर ...' हो।

(4) सम्बन्ध/सम्पर्क में रहने वाले और नियमित रूप से राजयोग क्लास करने वाले विशिष्ठ अधिकारियों की सूचि व अनुभवों की बुक तैयार करनी है, जो सेवा में उपयोगी होगी।

(5) प्रभाग के सभी सदस्यों का इमेल आईडी एकत्रीत करके सूचि तैयार करनी है, इसके द्वारा प्रभाग का सेवा-समाचार व पत्र आदि त्वरित भेजा जा सके।

(6) संदेश देने में बाकी रहे हुए प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारियों/कर्मचारियों का व्यक्तिगत सम्पर्क अभियान का आयोजन तीन/चार बी.के. भाई-बहनों का गृप बनाकर किया जाए। मुलाकात के दौरान उन्हों को संदेश पत्रिका छोटी बुक का लिटरेचर/स्लोगन/वरदान कार्ड/वेल्यु कार्ड की गिफ्ट में देना।

(7) वर्ष: 2015-16 में 2000 लाईफ मेम्बर बनाने का लक्ष रखा गया है।

प्रभाग के सदस्यों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, इसमें अनुभवी राजयोगी वक्ताएं: (1) बी.के. अवधेश बहन, (2) बी.के. हरीश भाई (3) बी.के. शैलेष भाई (4) बी.के. ज्योति बहन आदि ने प्रशिक्षण दिया।

महिला प्रशासकों का स्नेहमिलन कार्यक्रम में लगभग 100 महिला प्रशासकों ने लाभ लिया।

गोवा टुरीज़म डेवलपमेंट कोर्पोरेशन ली. के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम:

'द्रष्टिकोण एवं व्यवहार' विषय पर इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़, ग्वालियर ने प्रवचन में कहा कि कार्य के दौरान हमारा कार्यव्यवहार कैसा है - यह बहुत महत्वपूर्ण है। हम किस प्रकार का प्रभाव दूसरों पर डाल रहे है इस पर हमें ध्यान देना चाहिए। ब्रह्माकुमार अनुप, ग्वालियर ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का परिचय व ऑफिस में कार्य करने के दौरान होने वाले तनाव को छोटे-छोटे व्यायाम द्वारा दूर करने के उपाय बताये। इस कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारी निर्मला

Proceedings of Two days National Administrators' Conference held in Chennai Saturday 13-09-2014 and Sunday 14-09-2014

Two days National Administrators' Conference was held on Saturday 13.09.2014 and Sunday 14.09.2014 at Brahma Kumaris Retreat Centre, Sunguvarchatiram near Chennai.

On Saturday 13.09.2014, A Dialogue on the topic "Leading By Heart" for Administrators comprising IAS, IPS, IFS, IRS officers and their equal level Administrators in Banking, Insurance and other sectors was held. In the Inaugural address B.K.Ashaji, Chairperson of Administrators' Wing said - It is the time now to lead people by heart. God is also called Comforter of Heart, not the intellect. In the Journey of fulfilling our aim, we some time forget that we have people around us and not machines.

About 60 delegates participated. They discussed the spoken views and ideas dividing themselves in six groups.

On the next day Sunday, 14.09.2014 Conference on the topic "Achieving Excellence in Leadership" was held.

The Conference was inaugurated by Dr.K.Rosaiah, the Governor of Tamilnadu.

He congratulated the initiate of Brahma Kumaris in bringing excellence in the field of Leadership.

We are in an era of competitiveness loaded with undue stress and are facing a lot of trial and tribulations. Developing a spirit of mental ease and calmness, cultivating the habit of proper planning will help to us to attain success.

Today, the most critical part of leadership is managing one's thoughts and emotions and those of the people one work with. This requires more than just applying ready-made management formulae. Apart from knowledge, inner strength and integrity, it calls for the ability to read situations and people well. One who can do this will be able to come up with the right response and can easily create harmony in his team. This would provide an extra impetus to attain success.

Leadership is all about what is in our hearts. True leadership goes beyond just doing things. It is reflected through state of being. Leading from the heart is about exploring the rich resources at the core of our being and turning those into patterns of action. It is about setting the tone for creating an environment based on openness, respect and trust.

This is where Spirituality plays a key role in achieving excellence in leadership. Leadership is about being selfless and having an attitude of giving. A true leader is one who has generous heart and has the ability to share selflessly. When we are truly connected to ourselves, we become free from selfish and greedy motives and desires and develop an inner and positive approach.

Sister B.K.Ashaji in her Key note address said that it is more important to inculcate values in our routine, whatever height we reach. A great leader is the one who reach people with human touch. In the midst of problem and scenarios, we should never reject the human being behind it. Also she insisted us to see every problem as an opportunity. She symphonized that a leader creates leader not followers. She concluded saying that spirituality is only way to achieve excellence in leadership by bringing masters over our senses. Many prominent personalities, like Mr.G.R.K.Reddy, Chairman Marg Group, B.K.Avdesh Behn, National Co-ordinator, Administration Wing, Bhopal, B.K.Harish Bhai, HQs. Co-ordinator, Administration Wing, Mount Abu, B.K. Surendran, Bangalore, B.K. Shailesh, Godhra, Mr.Naresh Gupta, IAS (Retd.), Mr.Sitaram Meena IAS (Retd.), Dr.Rajaram IAS, Mr.S.K.Prabakar IAS, Mr.Bharat Trivedi, Director Atul Infotech Limited, Mr.Ram Krishna Garg, Chief General Manager (Retd.), SBI and Mr.Kanagaraj, Chairman, Jaya Group of Educational Institution spoke on the plenary and valedictory sessions.

Conference on
Awakening the Ruler within for
Excellence in Management
29th June 2014

B.K. Asha

B.K. Kuldeep

T. Harish Rao

B.K. Harish

B.K. Swaminathan

परिस्थिति का हल सहजता से किया जा सकता है।

- कार्य की सफलता के लिए आपस में एक-दूसरों को प्रेरणा रूप बनना चाहिए, और हर समस्या के हल के लिए सही समझ भी होना चाहिए, जैसे कि पवित्र धन और अपवित्र धन कैसे प्राप्त किया जा सकता है? इसका फायदा व नुकशान क्या है।
- वर्तमान समय में व्यक्ति की इच्छायें बढ़ती जा रही है और इसे पूर्ण करने के साधन कम हो रहे है, इसलिए ईच्छाओं का समाधान करने के लिए राजयोग चिंतन का अभ्यास जरूरी है यह अभ्यास जीवन जीने की कला सीखाता है।
- कोई भी परिस्थिति को समझकर आध्यात्मिक ज्ञान से अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना है। स्वयं को प्रोत्साहित कर कटिबद्ध होकर समस्या का समाधान करना है।
- अपने से बड़े व छोटे व्यक्तियों के सम्बन्ध अच्छे बनाने के लिए एक-दूसरे से सहयोगी बनना है।
- जीवन का लक्ष यही होना चाहिए कि हमें कोई भी परिस्थिति व समस्या में अहंकारमुक्त बन बेहतर रूप से हल करना है।
- व्यक्ति में चाहिए कि बजाय देने की और दूसरों के लिए अच्छा करने की भावना होगी तो सम्बन्धों में मधुरता व सद्भावना बढेगी।
- एक मिनट में अर्थात् कम से कम समय में समस्या का प्रबन्धन करने की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए देह की कर्मेन्द्रियों का प्रबन्धन करो, कुछ भी हो जाए अपनी आंतरिक खुशी नहीं जानी चाहिए, शारीरिक बिमारियों को दूर करने के लिए अपनी आत्मा को शक्तिशाली बनाना है। इसके लिए आत्मा का सम्बन्ध परमपिता परमात्मा से जोड़कर शांति की स्वर्णिम स्थिति में रहने का अभ्यास करना है।

राजयोग मेडिटेशन सत्र:

इस सत्र के वक्ता **ब्रह्माकुमारी उर्मिल बहन**, ज़ोनल को-ओर्डिनेटर, प्रशासक सेवा प्रभाग, गुड़गांव, नई दिल्ली ने राजयोग मेडिटेशन की पूर्व भूमिका बताते हुए कहा कि प्रशासन में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। योग द्वारा व्यक्ति की कुशलता में विकास होता है, इसलिए कहा जाता है - योगेषु कर्मण्य कौशलम्। विचारों के माध्यम द्वारा आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जोडना है, आत्मिक स्थिति की अनुभूति ही जीवन में महापरिवर्तन लाती है। शुद्ध, सात्विक, शक्तिशाली विचारों के चिंतन द्वारा आत्मानुभूति सुंदर रीति से करायी गई।

इस सत्र के अंत में **ब्रह्माकुमारी शक्ति बहन**, राजयोग शिक्षिका, हैदराबाद ने सुंदर रीति से सम्मेलन की सफलता के लिए आभारदर्शन किया।

शक्तिमान होगा।

इस महासम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलन द्वारा उद्घाटन किया गया।

भ्राता टी.हरीष राव, सिंचाई मंत्री, तेलंगाना सरकार ने प्रेरक सम्बोधन में कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किए जा रहे जागृति के प्रयास बहुत ही अच्छा है क्योंकि इससे आध्यात्मिकता तथा चिंतन से व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन आता है। जो स्वस्थ और बेहतर समाज के निर्माण की भूमिका तैयार करता है। आध्यात्मिकता के द्वारा ही कई पडकारों का समाधान कर सकते है। ऐसे जागृति के कार्यक्रम अनेकानेक शहर/गाँव में आयोजन करना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी उमा रानी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, हैदराबाद ने सुंदर रीति से मंच-संचालन किया।

प्रथम विशेष सत्र:

इस सत्र में **राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा बहन**, चेयरपर्सन, प्रशासक सेवा प्रभाग ने 'आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा पडकारों का सामना (Facing Challenges with Spiritual Strength) के विषय पर प्रभावशाली वक्तव्य दिया। इसमें से महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित है:

जैसे क्रिकेटर बैटिंग के लिए तैयार रहता है, वैसे हमें अपने आपको आध्यात्मिकता की बैट से पडकारों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

पडकारों का सामना करने के लिए पहले परिस्थिति को देखो, सामना कैसे करना है वह सोचो और समझो और फिर कार्य करना है। अपनी की हुई गलती का भी सोचकर सुधार करना है। जो अपने काम की नहीं है, उसे सोचना नहीं है, देखना भी नहीं है। इसके लिए आध्यात्मिक समझ चाहिए और मनोबल का विकास करना है।

पडकारों पर विजय पाने के लिए ....

(1) शांति में जाकर समाधान को सोचना है।

(2) समस्याओं को समझने के लिए समय निकालना है।

(3) पडकारों का हल करने के लिए मूल्यों पर आध्यारित कार्य करना है।

(4) अपने स्वमान को शक्तिशाली बनाना है।

(5) भारतीय संस्कृति में अनासक्त स्थिति को महत्व दिया है, इसको बनाने के लिए सम्मान, प्रेम की ईच्छा नहीं रखो, अपने कार्य को योग्य रीति से पूरा करो, शत्रु को अपना मित्र बनाओ, एक दूसरे के प्रति शुभ भावना रखो, परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोडकर एकाग्रता धारण करो। इस सत्र का कुशल संचालन **ब्रह्माकुमारी शक्तिबहन**, हैदराबाद ने किया।

द्वितीय विशेष सत्र: इस सत्र में **भ्राता ई.वी. स्वामीनाथन**, कन्सल्टन्ट एवं कोर्पोरेट ट्रेनर, मुम्बई ने 'तनाव को दूर करना ... विषय पर मानसिक व शारीरिक एक्सरसाईज द्वारा सुंदर रीति से स्पष्टीकरण किया। इसमें से महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित है:

तनावमुक्त बनने के लिए तनाव को अपने अन्दर से बाहर फेंको। सदा मुस्कुराहट में रहो। यह तनावमुक्त बनने का सुत्र है - तनावमुक्त बनने के लिए अपने आंतरिक सामर्थ्य द्वारा बाह्य दबाव को दूर करना है।

व्यक्ति कुदरत ने बनाया हुआ अद्भूत कम्प्यूटर है, जिसमें शरीर हार्डवेर है, आत्मा सोफ्टवेर है। अपना आंतरिक सामर्थ्य बढ़ाने के लिए राजयोग चिंतन का अभ्यास प्रतिदिन अवश्य करें। तामसिक भोजन नहीं लेना है।

Management शब्द के तत्वज्ञान को समझना है। मनुष्य एक ऐसा मणी है, उन्हें अपने आपको जागृत करके प्राकृतिक स्त्रोत को समय मर्यादा में उपयोग करना है।

संवाद सत्र:

इस सत्र का विषय था - सम्बन्धों में सद्भावना - एक प्रायोगिक अभिगम (Harmony in Relationships & practical Approach)

इस सत्र के पेनल गृप में **भ्राता ई.वी. स्वामीनाथन**, कन्सल्ट एवं कोर्पोरेट ट्रेनर, मुम्बई, **भ्राता न्यायमूर्ति वी.इश्वरैयाह**, चेरमेन, एन.सी.बी.सी., भारत सरकार, **भगिनी रंजना कुमार**, पूर्व वीजीलन्स कमिश्नर, सीवीसी, **राजयोगिनी अवधेश बहन**, राष्ट्रीय संयोजिका एवं निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज़, भोपाल (म.प्र.) ज़ोन, **ब्रह्माकुमारी शीला बहन**, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका, मेहंदीपटनम, हैदराबाद मंचासीन थे। इस सत्र का संचालन **ब्रह्माकुमारी रजनी**, राजयोग शिक्षिका, हैदराबाद ने कुशलतापूर्वक किया। इस सत्र में मंच-संचालिका द्वारा पेनलिस्ट को भी प्रश्न पूछे गये, इसका प्रत्युत्तर दिया गया, इसके कुछ बिंदु निम्नलिखित है:

- कोई भी संस्था में आने वाली समस्याओं को सहजता से हल करने के लिए कर्मचारी व अधिकारीगण में एक-

प्रबन्धन में श्रेष्ठता के लिए आंतरिक नेतृत्व को जागृत करें ... (Awakening the ruler within for Excellence in Management) के विषय पर हैदराबाद - शान्ति सरोवर में प्रशासक वर्ग के लिए आयोजित सम्मेलन का समाचार :

हैदराबाद में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ की एकेडेमी फॉर ए बेटर वर्ल्ड, शांति सरोवर के ग्लोबल पीस ओडिटोरियम में 29 जून, 2014, रविवार के दिन उपरयुक्त विषय पर प्रशासक वर्ग का सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया था। इसमें लगभग 1000 प्रशासक, व्यवस्थापक और प्रबन्धकों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन में उद्घाटन सत्र, दो विशेष सत्र, संवाद सत्र और चिंतन सत्र का आयोजन किया गया था। इस सत्रों का संक्षिप्त समाचार तथा वक्ताओं के महत्वपूर्ण विचारबिंदु निम्नलिखित है:

उद्घाटन सत्र:

इस सत्र के पूर्व कलाकारों ने सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य, भरत नाट्यम्, कथ्थकली आदि प्रस्तुत किया। इस सत्र के प्रारम्भ में **राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कुलदीप बहन**, निदेषिका, शांति सरोवर, ब्रह्माकुमारीज़, हैदराबाद ने स्वागत प्रवचन में कहा कि दुनिया के परम प्रशासक परमात्मा द्वारा दी गई श्रेष्ठ मत से कोई भी प्रशासक लोकप्रिय प्रशासक बन सकता है और वह राजयोग से सर्व समस्याओं का समाधान करके कुशल प्रशासन कर सकता है।

प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक **ब्रह्माकुमार हरीश भाई**, आबू पर्वत ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सन्दर्भ में तथा प्रभाग की सेवा प्रवृत्ति बताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का लक्ष है आध्यात्मिकता, जीवनमूल्य शिक्षा, राजयोग का अभ्यास के द्वारा मूल्य-निष्ठ समाज की रचना करने का है। प्रशासक सेवा प्रभाग प्रशासन में श्रेष्ठता लाने के लिए प्रशासक वर्ग में आध्यात्मिकता, जीवनमूल्य तथा आंतरिक शक्तियों को जागृत करने की विविधलक्षी प्रवृत्तियों के कार्यक्रमों का आयोजन के लिए कार्यरत है। राजयोग की श्रेष्ठ विधि से कर्म करने की कुशलता और जीवन में श्रेष्ठता आती है।

भगिनी रंजना कुमार, पूर्व वीजीलन्स कमिश्नर, सीवीसी, हैदराबाद ने शुभ कामना देते हुए कहा कि, जिंदगी में आध्यात्मिकता अपनाना व्यावहारिक मार्ग है प्रतिदिन एक घण्टा राजयोग चिंतन करना। मन की शांति के लिए आत्म-निरीक्षण करके अच्छे विचार करने है, इससे अपने अन्दर की क्षमता को बेहतरीन रीति से जागृत कर सकेंगे।

भ्राता सी.वी.आर. राजेन्द्रन, सीएमडी, आन्ध्र बैंक ने शुभेच्छा देते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाया जाता राजयोग एक श्रेष्ठ कार्य है, इससे अच्छा और सच्चा प्रबन्धन कर सकते है और सकारात्मक तरंगे फैला सकते है।

भ्राता इ.वी. स्वामीनाथन, कन्सल्टन्ट एवं कोर्पोरेट ट्रेइनर, मुम्बई ने अभिनंदन देते हुए कहा कि बेहतर प्रबन्धन के लिए एक दूसरे के प्रति सद्भावना और अहंकाररहित ज्ञान जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी का प्रशासन सभी के लिए प्रेरणादायी है।

भ्राता बीभाद दत्ता, चीफ कमीश्नर, इन्कमटेक्ष कमिश्नर, आन्ध्र प्रदेश में शुभेच्छा प्रगट करते हुए कहा कि कोई भी क्षेत्र में प्रबन्धन में प्रशासकों में आंतरिक परिवर्तन लाना महत्वपूर्ण कार्य है, इससे अच्छा प्रशासन का निर्माण होगा।

न्यायमूर्ति भ्राता वी. इश्वरैयाह, चेरमेन, एनसीबीसी, भारत सरकार ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि श्रेष्ठ प्रशासक वह है, जो प्रजाजनों को व्यक्तित्व-विकास के लिए प्रेरित करें। आध्यात्मिकता से ही प्रशासन को स्वयंसंचालित किया जा सकता है। ऐसा प्रशिक्षण सभी विभागों के अधिकारियों के लिए जरूरी है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा दीदी, चेयरपर्सन, प्रशासक सेवा प्रभाग एवं निदेशिका, ओम शांति रिट्रीट सेन्टर, गुडगांव, नई दिल्ली ने आशीर्वचन में कहा कि जब व्यक्ति की आत्मा अपने में सबकुछ होते हुए भी अपने आपको नियंत्रित नहीं कर सकते है, तब अपने आपको जागृत करने की जरूरत है। प्रशासक अधिकारी जरूर है लेकिन स्वराज्य अधिकारी बनने के लिए अपनी कर्मेन्द्रियों पर शासन करना है। अपना मन सुंदर व शक्तिशाली योग्यता है, बुद्धि भी महत्वपूर्ण योग्यता है, उसे जागृत करना है, इससे ही शासक सुख-शांति प्राप्त करने के लिए

महत्ता दर्शाकर प्रेरक संबोधन किया।

भ्राता वी.के. शर्मा, चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर, जी.टी.पी.एल. अहमदाबाद ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि दिल से नेतृत्व करना है, तो दिल में सचचाई हो, सफाई हो। दिल और दिमाग के बैलेन्स द्वारा अच्छे ते अच्छा नेतृत्व कर समस्याओं का समाधान कर सकते है। दिल खोलकर ज्ञान-रत्नों, गुणों, शक्तियों का दान करने से लोगों के दिल को जीत सकते है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश बहन जी, राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग, भोपाल ने राजयोग की महत्ता बताकर सम्बोधन में कहा कि जीवन की प्रयोगशाला में राजयोग द्वारा अद्भुत परिवर्तन के चमत्कारों से व्यक्ति जीवन में सब कुछ (स्वास्थ्य, समृद्धि, सुख-शांति) प्राप्त कर सकता है, साथ-साथ निराशावादी जीवन को आशावादी बना सकता है।

भ्राता मित्रलाल रेगमी, चीफ इन्वेस्टीगेशन ऑफिसर, बुटवल, नेपाल ने सम्मेलन में आकर किये हुए अनुभव बताते हुए कहा कि दिल से पुरूषार्थ करने से सफलता प्राप्त होती है और संसार बदलने के लिए अपना योगदान भी दे सकते है। यह ज्ञान सरोवर ऐसा संगम स्थान है जहाँ प्रेम और करूणा का अनुभव होता है। श्रेष्ठ प्रशासक का दर्शन होता है और परमात्मा से मिलन की अनुभूति होती है।

सम्मानीय मेहमान न्यायमूर्ति **भ्राता एस. पूजाहारी**, न्यायाधीश, ओरिस्सा हाई कोर्ट, कटक ने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि दिल से नेतृत्व करने का अभ्यास मुश्किल तो है, लेकिन वह पारदर्शिता, प्रमाणिकता जैसे जीवन मुल्यों से सहजता से कर सकते है।

भगिनी अनुपमा, प्रेसीडेन्ट, अनुपमा फाउन्डेशन, लखनऊ ने हृदयस्पर्शी अनुभव बताते हुए कहा कि आध्यात्मिकता द्वारा व्यक्ति का सशक्तिकरण कर सकते है। साथ-साथ किसी भी परिस्थितियों से गुजरते हुए, अपनी गलतियों को सुधारने का मार्गदर्शन भी मिलता है। आपने महिला सशक्तिकरण की की गई सेवाओं के अनुभव भी सुनाये।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा बहन जी, राष्ट्रीय अध्यक्षा, प्रशासक सेवा प्रभाग एवं निदेषिका, ओम् शांति रीट्रिट सेंटर, गुडगांव, नई दिल्ली ने अध्यक्षीय प्रवचन में प्रेरणा देते हुए कहा कि संसार को बदलने के लिए और संसार में अच्छाई को बढ़ाने के लिए अपनी आत्मा की आवाज को जानकर, समझकर, मनोबल को बढ़ाना है, सच्चाई, सफाई जैसे मूल्यों को अपनाना है। कर्म के नियम को समझकर शुद्ध संकल्प, शुभ भावना और उच्च विचार से अपने जीवन में आध्यात्मिक प्रगति करनी है। जीवन में सफलता का मन्त्र बताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की वरिष्ठ दादी क्वीन मधर बार-बार प्रेरणा देती रहती थी कि आत्मा को नम्रता से झुक झुक कर, पुरानी आदतों से मर-मर कर, जीवन में खुशी खुशी से सीखना है, सीखना है।

ब्रह्माकुमार शैलेष, सेक्रेटरी, प्रशासक सेवा प्रभाग, गोधरा ने समापन सत्र और सम्मेलन की सफलता के लिए सुंदर रीति से आभारदर्शन करते हुए कहा कि अपनी अंतर-आत्मा को जागृत करने से व्यक्ति स्वयं का नेतृत्व बेहतर रीति से कर सकता है। आत्म-अनुशासन और आध्यात्मिक प्रशासन से सुप्रशासन होता है और इससे भविष्य में दिव्य-प्रशासन का निर्माण होगा।

ब्रह्माकुमार हरीश भाई, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक सेवा प्रभाग, आबू पर्वत ने आध्यात्मिक शेर-शायरी सुनाकर, कुशलतापूर्वक इस सत्र का संचालन करके दिल से प्रशासन करने की कला अपनाने की प्रेरणा दी।

मधुरवाणी गृप द्वारा सुमधुर गीतों की प्रस्तृति :

ब्रह्माकुमार सतीश भाई तथा साथी गायक, संगीतकार के गृप के कलाकारों ने सम्मेलन के स्वागत सत्र, उद्धाटन सत्र और समापन सत्र में कर्णप्रिय संगीत के साथ सुंदर गीत प्रस्तुत करके सर्व को मंत्रमुग्ध किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रत : इस कार्यक्रम में ज्ञान सरोवर के कलाकारों द्वारा नाटिका, पंजाबी भांगडा, बाँटवा, गुजरात के बाल कलाकारों द्वारा नृत्य-गीत तथा विभिन्न प्रान्तों से आये हुए कलाकारों ने भारतनाट्यम्, शायरी, गीत-संगीत सुंदर रीति से प्रस्तुत करके सभी को अलौकिक खुशी-आनंद का अनुभव कराया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल संचालन **ब्रह्माकुमारी लीना बहन**, भूवनेश्वर ने **ब्रह्माकुमारी मधु बहन**, बांटवा, गुजरात के सहयोग द्वारा सुंदर रीति से किया।

राजयोग चिंतन सत्र : २४ से २७ मई, २०१४ के दौरान सुबह ६-३० से ८-०० बजे तक इस संस्था की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका **ब्रह्माकुमारी शीलु बहन**, **ब्रह्माकुमारी उषा बहन**, **ब्रह्माकुमारी गीता बहन** और **ब्रह्माकुमारी सुमन बहन** ने राजयोग की भूमिका के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देकर मेहमानों को राजयोग की गहन अनुभूति कराई।

भ्राता राकेश मित्तल, निवृत आई.ए.एस. पूर्व समाज कल्याण आयुक्त, लखनऊ ने प्रवचन में कहा कि अपनी स्वीकृति की कला को बढ़ाने के लिए सामाजिक स्वीकृतियों को अग्रीमता देनी है। समस्या के समय सहनशीलता, क्षमाभाव, आत्मनिरीक्षण जैसे गुणों का प्रयोग करना है। नीति-नियम मानवों के लिए होने के कारण, इसका यथायोग्य समय पर शुभ भाव से अर्थघटन करके व्यवहार में लाना जरूरी है।

सम्मानीय मेहमान **भ्राता बिमल पांडे**, प्रोजेक्ट हेड, टेकनोपाक एडवाईजर प्रा. लि. गुडगांव (वर्तमान में कोलकाता) ने कहा कि अपनी स्वीकृति पर सुख-शांति आधारित है, ईच्छायें दु:ख-अशांति का कारण होता है। व्यक्ति कर्म के ज्ञान की समझ से सहजता से स्वीकृत कर सकता है। परमात्मा ने समझ दी है कि जो कुछ होता है, वह पूर्व निश्चित है क्योंकि विश्व-नाटक तथा कर्म के सिद्धांत पर वह होता है।

ब्रह्माकुमारी शशी बहन, राष्ट्रीय संयोजिका, खेलकुद प्रभाग, आबू पर्वत ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि अपनी स्वीकृति की शक्ति को बढ़ाने के लिए स्वयं के अस्तित्व की महसूसता तथा समझ शक्ति जरूरी हे। पिताश्री ब्रह्मा के माध्यम द्वारा परमात्मा ने शिक्षा दी है कि इस विश्व-नाटक में हरेक की अपनी-अपनी भूमिका होती है। यह वास्तविक सत्य को समझने से स्वीकृति करने में उलज़न नहीं होगी। दूसरों प्रति न्याय के दृष्टिकोण के साथ-साथ एक/दूसरों प्रति स्नेह रखेंगे, तो अपने अंदर स्वीकृति की कला स्वत: आ जाती है।

सम्मानीय मेहमान **भ्राता पी.बी. सिंघ**, आई.ई.एस. जोइन्ट सेक्रेटरी एवं लेजीस्लेटिव काउन्सेल प्रेसीडेन्ट, इंडियन लीगल सर्विस ऑफिस एसोसीएशन, नई दिल्ली ने प्रेरक सम्बोधन में कहा कि श्रेष्ठ प्रशासक वह है जो दिल की आवाज के साथ-साथ सरकारी नीति-नियमों का भी ध्यान में रखकर प्रशासन करें।

ब्रह्माकुमारी मधु बहन, व्यवस्थानक सदस्या, प्रशासक सेवा प्रभाग, बांटवा (गुजरात) ने राजयोग की समझ देकर गहन शांति का अनुभव कराया।

राजयोगी ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी, मुख्य सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत ने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि यदि स्वीकृति की कला अपने अंदर लानी है तो ...

- जो व्यक्ति जैसा है, वैसा स्वीकार कर उनकी विशेषताओं की प्रशंसा करनी है।
- जिंदगी में यह सोचे कि जो होता है, वह अच्छा है।
- गलत मान्यताओं को दूर करने के लिए कर्म के नियम को समझना है।
- जब कोई भी ईच्छा को पूर्ण करने में राह नहीं देखेंगे, तो स्वीकृति अच्छी तरह से कर सकेंगे।
- कोई भी परिस्थिति, किसी की भूमिका को स्थान व समय को ध्यान में रखकर स्वीकार कर उसे हल करते रहेंगे, तो खुश रहेंगे और शांत भी रहेंगे।

ब्रह्माकुमारी लीना, व्यवस्थापक सदस्या, प्रशासक सेवा प्रभाग, भूवनेश्वर, ओरिस्सा ने सुंदर रीति से इस सत्र का संचालन किया।

चर्चा सत्र (Panel Discussion) : इस सत्र का विषय था - ईच्छा/अपेक्षाओं का प्रबन्धन (Managing Expectations)

इस सत्र में निष्णांत एवं अनुभवी महानुभावों की पेनल में **भ्राता शशीभूषण सामंत**, आई.एफ.एस. डायरेक्टर, एन्वायरमेंट, ओरिस्सा सरकार, कटक, **भ्राता आर.रमणी**, आई.ए.एस. निवृत्त चीफ सेक्रेटरी, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, **भ्राता सीताराम मीना**, आई.ए.एस (निवृत), निवृत लेबर कमिश्नर, उत्तर प्रदेश विभाग, **भ्राता भरत त्रिवेदी**, डायरेक्टर, अतुल इन्फोटेक एण्ड ट्रस्टी, अतुल फाउन्डेशन, वलसाड, गुजरात समाविष्ट थे) पेनलीस्ट गृप ने मंच संचालिका एवं श्रोतागण से पूछे गये प्रश्नों का उत्तर व समाधान बहुत अच्छी तरह से दृष्टांत देकर अनुभवयुक्त उत्तर देकर चर्चासत्र को जीवंत बनाया था। **ब्रह्माकुमारी राधा बहन**, ज़ोनल को-ओर्डिनेटर, प्रशासक सेवा प्रभाग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश ने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि व्यक्ति को लेने के बजाय देने की भावना ज्यादा रखनी चाहिए और आत्मा के मुख्य सात मूल्यों (प्रेम, आनंद, शांति, सुख ज्ञान, शक्ति, पवित्रता) को अपने अंदर भरने के लिए शक्तियों का स्त्रोत परमपिता परमात्मा जो सर्वशक्तिमान है, उनसे संबंध जोडकर आत्मा रूपी बेटरी को चार्ज करनी है। इस विधी द्वारा हम ईच्छाओं का प्रबंधन सहजता से कर सकेंगे।

ब्रह्माकुमारी रंजना, फेकल्टी, ओम् शांति रीट्रीट सेन्टर, गुडगांव, नई दिल्ली ने इस सत्र का संलाचन किया।

समापन सत्र: इस सत्र का विषय था - दिल से नेतृत्व का कार्यान्वयन एवं निर्वाहन (Implementing and sustaining Leading from the heart)

परमश्रद्धेय आदरणीया दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, आबू पर्वत ने वीडियो कॉन्फरन्स द्वारा नम्रता, सत्यता, प्रेम, पवित्रता जैसे जीवनमूल्यों की

Administrators' Conference
on
Leading from the Heart

Administrators' Conference
Workshop - III
Topic: Balancing Love & Law
24th May, 2014 at 04.00 pm

Administrators' Conference
Workshop - II
Topic: Balancing Head & Heart
24th May, 2014 at 04.00 pm
at Gyan Sarovar, Mount Abu
B.K. Bunny

से क्षमा करके शिक्षा देनी है।

- शांति की शक्ति से ही समाधान मिलता है, इससे संतुलनता आती है।
- हर समस्या का समाधान राजयोग से मिलता है।
- समस्या के समय पर दिल से परमात्मा को -मेरा बाबा- कहने से इसका समाधान तुरन्त मिल जाता है।
- राजयोग संजीवनी बुट्टि है, इससे जीवन जीने की जागृति आ जाती है, और हर प्रकार का बैलेन्स आ जाता है।
- मानवीय दृष्टिकोण से नियमों का अमलीकरण होना चाहिए।
- व्यक्ति के व्यवहार में सुधार लाने के लिए आत्मा के मूल गुण का विकास करना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी सरस्वती एवं अन्य मुख्य प्रशासिका दादियों द्वारा स्नेह और नियम का संतुलन से गुणों का विकास असंख्य मानव-आत्माओं में कराया है।
- हर व्यक्ति को अपने वर्तमान समय में मिला हुआ कार्य बोज़ रहित स्थिति से पूर्ण करना चाहिए क्योंकि कभी भी परिस्थिति व मृत्यु आ सकता है।
- कोई भी परिस्थिति में व्यक्ति को स्नेह एवं नियम का संतुलन रखना ही चाहिए तब वो परिस्थिति व मृत्यु आ सकता है।
- कोई भी परिस्थिति में व्यक्ति को स्नेह एवं नियम का संतुलन रखना ही चाहिए तब वो परिस्थिति में समाधान प्राप्त कर सकता है।
- जो व्यक्ति परमात्मा से प्यार पाता है, वह हर व्यक्ति के साथ प्यार से व्यवहार करता है। प्यार से ही नियमों का अमल सहजता से करा सकते है।
- जब व्यक्ति में दिव्य गुण व विशेषताएं होती है, वह सहजता से स्नेह व नियम का संतुलन कर सकता है। सतयुग में इसका संतुलन स्वयंसंचालित होता है। समय अनुसार इसमें परिवर्तन आने से असंतुलनता आई है, इसे आध्यात्मिकता एवं राजयोग से पुनः संतुलनता लाने का पुरूषार्थ करना चाहिए।
- प्रेरणादायी नेतृत्व के लिए स्वयं की चेतना में ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग के अभ्यास से परिवर्तन करता है।
- जब व्यक्ति में चेतना का विकास होता है, तो कोई कमी नहीं रहती क्योंकि वह सही रूप से इसकी पूर्तता करने के लिए शक्तिमान बनता है।
- स्वयं की चेतना का विकास करने के लिए निस्वार्थ भाव, धैर्यता, मधुरता, सच्चाई, सफाई, सादगी, दृढ़ संकल्प व मनोबल आदि की आवश्यकता है।
- व्यक्ति को अपने अहंकार को दूर करने के लिए आंतरिक स्वमान व चेतना को जागृत करना है।
- चेतना में परिवर्तन लाने के लिए विशालता चाहिए, गलतीयों को समझकर दूर करना है। एक दूसरे में विश्वसनीयता जगानी है, अपने साथियों में आध्यात्मिकता का विकास करना है। हर समस्या का सहानुभूतिपूर्वक समाधान करना है।
- बदलाव की शुरूआत अपने आपसे करनी है, जो दूसरों तक सरलता से बदलाव करने की प्रेरणा मिलती है। देहभान को छोडना है, आत्मभान को लाना है।
- कथनी-करनी में अंतर नहीं रखना है।
- किसी भी सिद्धि में/सफलता में स्वयं का योगदान महत्वपूर्ण होता है।
- शिस्तपालन से चेतना का विकास करने में तीव्रता आती है।
- किसी भी परिस्थिति में व्यक्ति को सच्चे राह पर ईमानदारी से चलना है, जीवन मूल्यों को अपनाना है।

खुला सत्र - II : इस सत्र का विषय था - स्वीकृति की कला (The Art of Acceptance)

ब्रह्माकुमारी उर्मिल, ज़ोनल को-आर्डिनेटर, प्रशासक सेवा प्रभाग, पालम विहार, गुडगांव ने मुख्य वक्तव्य में कहा कि दूसरों के प्रति ईच्छाएं, ईर्ष्या, तुलना आदि उत्पन्न होती है, तो अस्वीकृति का भाव आता है, इसे दूर करने के लिए राई जैसी गलती को पहाड नहीं बनानी है, हरेक की कार्यक्षमता अलग-अलग होती है, यह समझ अपनाएं, अपनी शक्तियों को बचाना है, उन्हें व्यर्थ नहीं गंवानी है, अपने अंदर रही हुई शक्तियों को जागृत करनी है, अहंकार से निर्णय नहीं लेना है ... यह सारी बातें राजयोग चिंतन द्वारा सहजता से कर सकते है - यही अभ्यास हमारी स्वीकृति की कला को बढ़ाती है।

Administrators' Conference
Workshop - I
Topic:
Managing versus Leading

दिल से नेतृत्व - विषय पर
प्रशासक वर्ग का सम्मेलन

Administrators' Conference
on
Leading from the Heart

दिल से नेतृत्व - विषय
प्रशासक वर्ग का सम्मेलन
Plenary Session - I
Topic: Leading from the Heart
The Inside Out Approach
May, 2014 at 06.00 pm
Mount Abu

कानून की बातें करता है जबकि दिल प्रेम की बात मानता है। अर्थात् लव और लॉ का बैलेंस रखना जरूरी है। यदि दिमाग दिल के अधीन कर दी जाए तो मामला उत्तम बन सकता है।

राज्य निर्वाचन आयोग दिल्ली एवं चंदीगढ के चुनाव आयुक्त **भ्राता राकेश मेहता** ने सम्मेलन को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज का विषय: दिल से नेतृत्व - काफी महत्वपूर्ण है। प्रशासक का काम काफी महत्वपूर्ण होता है। विश्वसनीयता की कमी हो, तो सफलता संदेहस्पद हो जाती है। विश्वसनीयता को बनाये रखने के लिये कौन कौन से मार्ग होने चाहिए ? सख्ती से काम चलने वाला नहीं है, यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आने पर मैं ने जाना कि सख्ती के बजाय प्रेम से सहयोग मिलता है सभी का। काम में सफलता मिल जाती है।

जन प्रशासन मंत्रालय, नेपाल काठमण्डु के संयुक्त सचिव **भ्राता सूर्य प्रसाद शर्मा जी** ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यहाँ मैं काफी आनंद की अवस्था में हूँ। यहाँ की कार्यप्रणाली सर्वोत्तम है। मै ऐसे सुंदर कार्यक्रम के आयोजन के लिए संस्थान का अभिवादन करता हूँ।

लखनऊ से पधारे समाज कल्याण विभाग के पूर्व आयुक्त **भ्राता राकेश मित्तल जी** ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि आबू पर्वत पर आना हमेशा पुनर्जीवन पाने जैसा होता है। दुनिया में आध्यात्म एवं धर्म की मदद से शांति की स्थापना हो सकती है। प्रशासन का चेहरा मानवीय कैसे बने ? इसके लिये इस संस्थान की शिक्षाएं चाहिये। प्रेम के आधार पर किया गया कार्य स्वच्छ होता है और सफलता मिलती है। आपने अपने जीवन से जुडी अनेक बातें बताई और प्रतिपादित किया कि दिल के फैसले हंमेशा ही अच्छे होते है और श्रेष्ठ होते है।

उड़ीसा से पधारे उत्पाद आयुक्त **भ्राता अशोक कुमार तरेनियां** ने विशिष्ठ अतिथि के रूप में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि इस ईश्वरीय स्थल पर आने की प्रेरणा मुझे अपने सहयोगियों से मिली। मैं जान रहा हूँ कि अब मेरे जीवन की दिशा सकारात्मक रूप से बदलने जा रही है। एक ईमानदार प्रशासक अच्छा कार्य कर सकता है।

प्रशासक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक **ब्र.कु. हरीश भाई** ने सम्मेलन में पधारे हुए सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया।

मोहाली, पंजाब से आये हुए प्रभाग की व्यवस्थापक सदस्या **ब्रह्माकुमारी प्रेम बहन** ने राजयोग का अभ्यास कराकर गहन शांति की अनुभूति करवाई। प्रशासक प्रभाग की गुजरात क्षेत्रीय संयाजिका **ब्र.कु. नेहा बहन** ने कार्यक्रम का सुंदर संचालन किया।

चार कार्यशालाओं के सत्रों का समाचार:

इस सम्मेलन के दौरान चार कार्यशालाएं रखी गई थी, जिसमें अनेक विद्वान वक्तागण एवं अनुभवी बी.के. भाईबहनों ने अपने विचार व्यक्त किये। चर्चा के महत्वपूर्ण विचारबिंदु निम्नलिखित है:

- नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का कहना और करना समान होना चाहिए।
- दिमाग की बातें दिमाग तक रहती है, दिल की बातें दिल तक रहती है लेकिन नेतृत्व करने वाली व्यक्ति के दिल में उतरी छुई बातें कर्मों में आती है।
- नेतृत्व करने वाले व्यक्ति की दृष्टि दूरंदेशी होने के कारण भविष्य के लिए अपने साथियों को भी नेता बनाता है।
- प्रबन्धन को बेहतरीन बताने के लिए वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन लाना जरूरी है।
- नेतृत्व करने वाले व्यक्ति में नैतिकता और सात्विकता होनी चाहिए। यदि परमात्मा का डर होगा, तो बूरे कर्म नहीं होते।
- नेतृत्व विकास के लिए राजयोग चिंतन जरूरी है। अच्छा नेतृत्व करने के लिए स्नेह (Love) और नियम (Law) का संतुलन, निस्वार्थ प्यार, अपने में गुणों का विकास करना है।
- नेतृत्व में सेवाभाव हो, दिल से सेवा करने से दूसरों के दिल को जीत सकते है।
- जिंदगी में सफलता पाने के लिए हर बात में संतुलन चाहिए। देह-अभिमान से असंतुलनता आती है, आत्म-अभिमान से संतुलनता आती है।
- किसी की कमी को मस्तिष्क (Head) तक रखना है, गलती करने वाले को दिल (Heart)

Administrators' Conference
Workshop - IV
Topic: Shift in consciousness
for inspirational leadership

प्रशासकों, व्यवस्थापकों एवं प्रबन्धकों के लिए 'दिल से नेतृत्व' विषय पर 23 से 27 मई, 2014 तक ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत पर आयोजित प्रशासक वर्ग के सम्मेलन का संक्षिप्त समाचार

प्रशासक सेवा प्रभाग, राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउन्डेशन तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रशासकों, व्यवस्थापकों और प्रबंधकों के लिए -दिल से नेतृत्व- (Leading from the Heart) के विषय पर आबू पर्वत की अनुपम सौदर्य भूमि में स्थित ज्ञान सरोवर केम्पस में २३ से २७ मई, २०१४ के दौरान सम्मेलन का आयोजन किया गया। समस्त भारत के विभिन्न राज्य/प्रदेश तथा नेपाल से आये हुए लगभग ६०० प्रशासनिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने लाभ लिया।

सम्मेलन का संक्षिप्त समाचार निम्नलिखित है:

स्वागत सत्र:

ब्रह्माकुमार रोहित, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासक सेवा प्रभाग, वलसाड ने स्वागत प्रवचन किया।

ब्रह्माकुमार मोहन भाई सिंघल, एकेडेमी को-ओर्डिनेटर, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत ने ब्रह्माकुमारीज़ एवं ज्ञान सरोवर के संदर्भ में विस्तार से बताया।

भ्राता बी.सी. जोशी, आई.पी.एस. निवृत आई.जी. पुलीस, भोपाल, म.प्र. ने शुभ कामना प्रकट करते हुए अनुरोध किया कि यहाँ किए गये दिव्य अनुभवों का आनंद लेने के लिए प्रतिदिन ब्रह्माकुमारीज़ के सेवास्थान पर जाकर जीवन में दिव्यता का अनुभव अवश्य करें।

भ्राता चेत प्रसाद उप्रेती, चीफ ऑफ ट्रान्सपोर्ट मैनेजमेंट डिपार्टमेंट, नेपाल सरकार, नेपालगंज ने अभिनंदन करते हुए कहा कि यहाँ की आध्यात्मिकता का अनुभव करने का परम सौभाग्य मिला है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश बहन जी, राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासक सेवा प्रभाग, भोपाल ने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि दिल और दिमाग के संतुलन से कुशासन को सुप्रशासन में बदल सकते है और प्रशासन ठीक रीति से होता है, इसके लिए हर व्यक्ति को राजयोग का अभ्यास करके अपना स्व-शासन ठीक करना होगा।

ब्रह्माकुमारी वीणा, व्यवस्थापक सदस्या, प्रशासक सेवा प्रभाग, सीरसी, कर्नाटक ने इस सत्र का सुंदर रीति से संचालन किया।

उद्घाटन सत्र:

विषय: **दिल से नेतृत्व - (Leading from the Heart)**

इस प्रभाग की अध्यक्षा तथा सम्मेलन की अध्यक्षता कर रही **राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी जी** ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि दिल की बात को सदैव सुनना चाहिये। हम जानते है कि हम आत्मा हैं जो कि परमात्मा की संतान है। एक-दूसरे को समझने की क्षमता दिल की विशेषता है। दिमाग से हम सीमित रह जाते है। दिल की मदद से हम अनेक कार्य सफलतापूर्वक कर पाते हैं। शुद्ध भावनाओं से एक दूसरे को देखना सफलता की पहली शर्त है। सफलता के लिए हमें अपना सांसारिक नजरिया बदलना होगा। गल्तियाँ हमारे विवेक को खाती रहती है। अपने जीवन को सफल करने के लिये दिल की मदद आवश्यक है। कल्याणकारी प्रशासन का आधार अनुशासन है अर्थात् अनुसमान आत्मा की समझ एवं तदनुरूप आचरण ही श्रेष्ठ जीवन बनाने की कला सिखलाता है। सफलता के लिये केवल प्रेम ही एक उच्चतम लॉ है। इसे अपने जीवन में अपना कर देखिये।

राजनीतिज्ञ सेवा प्रभाग के अध्यक्ष एवं प्यूरिटी नामक मासिक पत्रिका के संपादक तथा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी भ्राता **ब्रह्माकुमार बृज मोहन जी** ने प्रमुख वक्ता के रूप में आज के सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि अगर दिल और दिमाग का मुकाबला हो तो क्या हो ? दिमाग ने आण्विक शस्त्र उत्पन्न किये है जबकि दिल ने इसके प्रयोग का प्रतिरोध किया है। दिमाग प्रश्न करता जाता है जबकि दिल इनका प्रेम पूर्ण उत्तर देता है। दिमाग की वजह से अहं की उत्पत्ति होती हे जबकि दिल इनको नापसंद करता है। दिल संभालता है जबकि दिमाग इसकी परवा नहीं करता। दिमाग नियम

Mumbai-Colaba: B.K. Gayatri,
Executive Member, Administration Wing,
Mumbai is Delivering lecture on the topic:
"Stress-free Administration" at
Bombay Electric Supply
& Transport Corporation Ltd., Mumbai.

Palam Vihar Delhi : Brother Ashwin- Industrialist, Brother Jeevan Sahay,
Principal cum General Manager of the State Bank Academy,
Sister Sudha, Director-Russia Connecting Centers
Sister Urmil-Director Palam Vihar Center and Sister Jayshree, Senior HR, State Bank Academy

ENQUIRIES:
For further information, please contact us:

Chairperson : **B.K. Asha**
Pandav Bhawan,,25, New Rohtak Road,
New Delhi
E-mail: bkashaorc@gmail.com,
M: 9810674004

National Co-ordinator : **B.K. Avdhesh**
'Rajyoga Bhawan', E/5, Arera colony,
Bhopal-462016
Email: bhopal@bkivv.org,
M: 9425110771

Hqs. Co-ordinator : **B.K. Harish**
Brahma Kumaris, Admn Wing Office,
Vishwa Parivartan Bhawan,
Shantivan, Abu Road (Rajasthan)
E-mail: administratorswing@bkivv.org
M: 9414154847

: आवश्यक जानकारी :

* प्रशासक वर्ग की सेवा अर्थ साहित्य जैसे कि ट्रैनिंग बुक, अनुभवों की बुक, प्रवचन माला, स्लोगन्स, ब्लैसिंग कार्ड्स, कैलेन्डर, पोस्टर आदि प्राप्त करने के लिए शान्तिवन, विश्वपरिवर्तन भवन में स्थित प्रशासक सेवा प्रभाग की ऑफिस में बी.के. हरीश भाई (मो.नंबर: 9414154847) से सम्पर्क कर सकते हैं।
* प्रशासक वर्ग की सेवाओं के लिए स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, आबू पर्वत पर बैंक एकाउन्ट खोला गया है, जिसका नंबर: 31705602619 हैं।

Compilation & Computer
Designing by : **B.K. Milan - Nadiad, B.K. Harish, Mt.Abu.**
Edited by : **B.K. Asha, ORC, Delhi - B.K. Shailesh, Godhra**
Published by : **Administrators' Service Wing, Rajyoga Education & Research Foundation**

निवेदन

प्रशासक सेवा प्रभाग के सेवा समाचार फोटो सहित तथा स्वरचित कविता, गीत, लेख आदि ब्र.कु. हरीश, प्रशासक सेवा प्रभाग की ऑफिस, शान्तिवन में भेजकर अपना सहयोग प्रदान करें।

– ब्र.कु. आशा,
राष्ट्रीय अध्यक्षा, प्रशासक सेवा प्रभाग

Administrators' Service Wing HQs.Office
'Vishwa Parivartan Bhavan', Wings Office
Brahma Kumaris, Shantivan, Abu Road (Raj.)
E-mail: administratorswing@bkivv.org; bkharishabu@gmail.com
Mobile No.: (0) 9414154847